

DUMKAL COLLEGE

SANSKRIT STUDY MATERIALS 3RD & 4TH SEM (MINOR)

Course Code: SANS-MIN-T-02

प्रश्नः मूर्ख पक्षिति विषये भर्तुहरिर मतान्तर आलोचना कर। मान-1०

उपर्युक्त उत्तरिर मते, जगते तिन रकमेर मानूष देखा याय— विज्ञ, अज्ञ एवं अञ्जज्ञानी वा पक्षितमन्य। मूर्ख शब्देर द्वारा एखाने शेषोऽनुदेवेर कथाइ बला हयेहे। हठकारिताइ तादेवेर स्वभावेर प्रधान बैशिष्ट्य। मानूषेर चेष्टाय असाध्यसाधनाव संज्ञव हते पारे, किन्तु मूर्ख लोकेर मनोरञ्जन करा असन्तव ब्यापार। यिनि सं उपदेशेर साहाय्ये मूर्ख लोकके विपथ थेके निवृत्त करार चेष्टा करेन, ताके परिणामे उपगासेर पात्र हते हय।

यादेर ज्ञान आছे तारा असूयाग्रस्त, सकलके एड़िये चलेन। यादेर प्रभुत्व आछे तारा गर्वभरे उद्भव, अहक्षारी। यादेर ज्ञान नेहि तारा जड़बुद्धि, मूर्ख। नीतिकथा तादेर अस्त्रेर प्रवेश करे ना, कणेहि शुक्र हये याय। प्रकृत मूर्ख व्यक्तिके सहजेइ प्रसन्न करा याय। कारण, तार मूर्खता समझ्के से निजेइ जाने एवं निजेके मूर्ख बलेइ माने। सेजन्य ज्ञानी व्यक्तिके से मान्य करे एवं तार कथाय से विश्वास करे। ताइ प्रकृत मूर्ख व्यक्तिके प्रसन्न करा सहज।

विज्ञ व्यक्तिके आराव सहजे प्रसन्न करा याय। कारण तिनि ज्ञानी, ताइ अस्त्रेहि संस्कृत। तार कटो प्राप्य ता तिनि जानेन। काजेइ यटो पान, तातेहि तिनि संस्कृत हन। या पान ना, ताके तिनि तार अप्राप्य बले मने करेन। ताइ विज्ञ व्यक्तिके प्रसन्न करा अपेक्षाकृत सहज।

क्षामात्र शास्त्रज्ञानेर जन्य यिनि पक्षितमन्य, अर्थां यिनि मूर्ख हयेओ निजेके पक्षित मने करेन, ताके ब्रह्माओ संस्कृत करते पारेन ना। कारण कोन किछुइ तार काछे यथेष्ट बले मने हय ना। सर्वदा तिनि भाबेन, तार प्राप्य आराव बेशी हउया उचित। कवि भर्तुहरि बलेहेन— मकरेर मुखेर मध्ये अवस्थित दाँतेर मध्यस्थल थेकेओ जोर करे मणि संश्लेष करा येते पारे, चक्षु तरञ्गमालाय विश्वुक समूद्राव सीतार दिये पार हउया येते पारे, क्रुक्ष सर्गकेओ पुण्पस्त्रबकेर मतो मन्त्रके धारण करा येते पारे, किन्तु दूराग्रह-क्वलित मूर्खलोकेर चिन्तके प्रसन्न करा सन्तव नय। अर्थां, असन्तव काजाव कथनाव सन्तव हते पारे पुनः पुनः चेष्टार माध्यमे। किन्तु शत-सहस्र चेष्टा करेओ पक्षितमन्य मूर्ख व्यक्तिके संस्कृत करा याय ना।

बालि शुक्र पदार्थ। बालिर मध्ये कथनाव तेल पाओया याय ना। किन्तु यत्त्रेर संसे प्रेषण करले बालिर मध्ये ओ हयतो तेल पाओया येते पारे। मरीचिकाते जल पाओया याय ना। किन्तु हयतो कथनाव केन तृष्णार्थ मानूष मरीचिकाते जल पान करते पारेन। खरगोशेर कोन शृंग हय ना। किन्तु कोन अमणकारी हयतो कोन एकदिन खरगोशेर

(2)

शृंग संश्लेष करते पारेन। उपरिउक्त सब विषयगुलिइ अलीक, ताइ असन्तव। एहि असन्तव काजगुलिओ हयतो सन्तव हते पारे। किन्तु असंख्याव चेष्टा करेओ पक्षितमन्य मूर्ख व्यक्तिके संस्कृत करा याय ना।

कोमल मृगालदशेर तस्तु दिये दृष्ट इतिके बन्धन करा याय ना। से अति सहजेइ सेहि बन्धनके छिम हये। शिरीषफूलेर अग्रभाग दिये हीरकखण्ड बिदारण करा याय ना। ताते शिरीषफूलइ छिम हवे, हीरकखण्डे कोन आँचड़इ लागवे ना। मधु मिष्ठ, एहि विषये कोन सन्देह नेहि। किन्तु बिन्दु बिन्दु मधु दिये लवणसमूद्रेर मधुरता उंगादन करा याय ना। उपरिउक्त सब विषयगुलिइ असन्तव। ठिक तेमनि, अमृतबर्यी नीतिकथार माध्यमे कोन पक्षितमन्य दुर्जन मूर्ख व्यक्तिके संपत्ते आना याय ना। एहि काज असन्तव।

मौनीताव अबलम्बन मूर्ख लोकेर विशिष्ट भूषण। मौनीताव तादेर अज्ञतार आबरण एवं अत्यन्त हितकारी। ये सभाय सकलेइ विद्वान, सेहि सभाय मौनता अबलम्बनहि मूर्ख लोकेर बाँचार एकमात्र उपाय। सुदर्शन सुसज्जित कोन मूर्ख व्यक्तिके दूर थेके खुब सुन्दर देखाय, यत्कृष्ण पर्यन्त से कोन कथा ना बले। किन्तु कथा बलनेहि तार मूर्खता धरा पड़े याय। ताइ शास्त्रे आछे—

“दूरतः शोभते मूर्खः लम्बान् सुपटावृतः।

तावर्थ शोभते मूर्खः यावर्थ किञ्चित्त भावते।”

मूर्ख व्यक्तिर ज्ञान कृपमधुकेर मतो असम्पूर्ण, अन्द्रेर हस्तिदर्शनेर मतो खन्दित। किन्तु तार मध्ये सबजातार अभिमान पूर्ण यात्राय विराजमान। मूर्ख व्यक्ति यदि कथनाव विद्वान व्यक्तिर संस्पर्शे एसे तार काछे किछु ज्ञान लाभ करे, तर्थन तार सेहि अभिमान दूर हय। तर्थन तार मने विश्वास जागे ये से प्रकृतहि मूर्ख। शरीर थेके ज्ञुर छेड़े याओयार मतो, तार शरीर थेकेओ तर्थन अभिमान दूर हये याय।

मूर्ख विवेकहीन व्यक्तिर द्रुमशः अबनति हय। कवि भर्तुहरि एहि विषयाटि एकटि उदाहरणेर साहाय्ये सुन्दरभावे आमादेर काछे उपस्थिति करेहेन। गঙ्गा येमन प्रथमे द्वर्ग थेके शिवेर माथाय, तारपर शिवेर माथा थेके हिमालये, हिमालय थेके भूमिते, अतःपर भूमि थेके समूद्रे पतित हय— धीरे धीरे निम्न थेके निम्नतर स्थाने आश्रय लाभ करे। सेरप मूर्ख विवेकहीन व्यक्तिदेराव शतप्रकारे अबनति हय।

आगुनके जलेर द्वारा प्रश्मित करा याय, सूर्येर प्रथर तेज छत्र द्वारा रुद्ध करा याय, तीक्ष्ण अक्षुशेर साहाय्ये मदमत गजराजके बशीभूत करा याय, लाठि दिये वृष वा गर्दावके शास्त्र करा याय, औषध सेवनेर द्वारा ब्याधिर उपशम करा याय, विविध मध्येर प्रयोगे विषके निवारण करा याय, उपरिउक्त सब किछुरहि औषध शास्त्रे आछे। किन्तु मूर्ख पक्षितमन्य व्यक्तिके बशीभूत करार कोन औषध शास्त्रे नेहि। भर्तुहरि बलेहेन— “सर्वस्योषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्रोषधम्”।

পঃ বিদ্যুৎপদ্ধতি বিষয়ে ভর্তৃহরির মতামত আলোচনা কর।

উঃ ভর্তৃহরির মতে, জগতে তিনি রকমের মানুষ দেখা যায়— বিজ্ঞ, অজ্ঞ এবং অল্পজ্ঞানী বা পদ্ধতিশৰ্ম্ম্য। বিদ্বান সকলের শ্রদ্ধার পাত্র। বিদ্বানের যোগ্য সমাদর রাজার অবশ্যিকর্তব্য। রাজা সম্পদের অধিকারী, কিন্তু বিদ্যাধন সর্ব অবস্থায় অবিনশ্বর এবং অপহরণের অযোগ্য। সেই সম্পদ বিতরণ করলেও কমে না, বরং বেড়ে চলে এবং সব সময়েই অনিবর্চনীয় আনন্দ দান করে। সম্পদের প্রভাবে বিদ্যাকে স্তুত করা যায় না। বিদ্যাই পুরুষের যথার্থ এবং শাশ্বত ভূয়ণ। স্বদেশে এবং বিদেশে বিদ্যাই যথার্থ বস্তু, গুরু এবং দেবতা। কবিত্বশক্তি যাঁর আছে, রাজত্বও তাঁর কাছে তুচ্ছ। বিদ্বান ব্যক্তির সাহচর্যে পুরুষের অশেষ কল্যাণ হয়— চিন্তায় এবং ভাষায় স্বচ্ছতা আসে, যশ বিস্তৃত হয়। বিদ্বান ব্যক্তিকে অবজ্ঞা করা রাজার পক্ষে বুদ্ধিহীনতা। তাই বলা হয়— “স্বদেশে পুজ্যতে রাজা বিদ্বান সর্বত্র পুজ্যতে”।

শাস্ত্রবাক্যে সমৃদ্ধ শব্দের প্রয়োগে বাক্য যাঁদের সুন্দর, শিক্ষা যাঁদের শিষ্যকুলে বিতরণের যোগ্য, যাঁরা খ্যাতিমান সেই কবিকুল যে রাজার রাজত্বে ধনহীন অবস্থায় বাস করেন সেই রাজা অবশ্যই জড়বুদ্ধি। বিদ্বান কবিদের অর্থ না থাকতে পারে, কিন্তু তাঁদের কবিত্বশক্তি আছে, পার্ডিত্য আছে। তাই তাঁরা অর্থ ছাড়াই প্রভুত্বের অধিকারী। মণি মহামূল্যবান। কীটদ্রষ্ট হলেও মণির মূল্য হ্রাস পায় না। সেই মণির মূল্য যাঁরা হ্রাস করেন, নিন্দার পাত্র সেই অযোগ্য পরীক্ষকেরাই।

রাজগণকে সম্মোধন করে ভর্তৃহরি বলেন— হে রাজগণ! বিদ্যা মহাধন। যে ধন চোর চুরি করতে পারে না, সব সময়েই যা কোনো এক অনিবর্চনীয় আনন্দ দান করে, প্রার্থীদের মধ্যে দিবারাত্রি বিতরণ করলেও যা কেবল বেড়েই চলে এবং প্রলয়কালেও যা ধৰ্মস হয় না— সেই বিদ্যা নামক শুণ্ঠন যাঁদের আছে, তাঁদের কাছে আগ্নাতিমান পরিহার করে চলুন। তাঁদের কাছে স্পর্ধা দেখানোর ক্ষমতা কার আছে? যাঁরা তত্ত্বজ্ঞান লাভ করেছেন সেই পদ্ধতিদের অবমাননা করবেন না। সদ্দোজাত মদজলের রেখায় কৃষ্ণবর্ণ যাদের গন্তব্য সেই গজকুলকে যেমন মৃগালের তস্ত দিয়ে বন্ধন করা যায় না, সেরকম তৃণের মতো অসার সম্পদ সেই পদ্ধতিদের রূপ করতে পারে না।

ক্রুদ্ধ বিধাতা হৎসের পদ্মবনে বিচরণের আনন্দই কেবলমাত্র নিঃশেষে বিনষ্ট করতে পারেন, কিন্তু দুধ ও জলের পার্থক্য নিরন্পলে তার যে নৈপুণ্যের খ্যাতি প্রসিদ্ধি লাভ করেছে, তা তিনি নষ্ট করতে পারেন না। সেরূপ রাজাও বিদ্বান ব্যক্তিকে শারীরিক বা মানসিক কষ্ট দিতে পারেন, কিন্তু তাঁর পার্ডিত্য, যশ তিনি কখনও নষ্ট করতে পারেন না।

কেয়ুর বল, চাঁদের মতো উজ্জ্বল হার বল, স্মান বল, চন্দন বল, ফুল বল, চুলের প্রসাধন বল— কোন কিছুই পুরুষকে ভূষিত করে না। পরিশুদ্ধ যে বাণী পুরুষ ধারণ করে, একমাত্র সেই বাণীই পুরুষকে ভূষিত করে। আভরণসামগ্ৰী নষ্ট হয়ে যায়, কিন্তু বাঞ্ছয় যে

মান-১০

আভরণ তা চিরকালই আভরণ হয়ে থাকে। বিদ্যাই মানুষের উত্তম আকৃতি, বিদ্যাই মানুষের একান্তে রক্ষিত সম্পত্তি, বিদ্যাই ভোগের সাধন, যশ এবং আনন্দের নিদান। বিদ্যা শুরুজনেরও শুরুজ্ঞানীয়। প্রবাসে বিদ্যাই বস্তু, বিদ্যাই অভীষ্ট দেবতা। রাজসভায় বিদ্যারই সমাদর হয়, সম্পদের নয়। যার বিদ্যা নেই, সেই ব্যক্তি পশুত্তল।

মানুষের যদি ক্ষমাণুণ থাকে তবে কবচের কী প্রয়োজন? যদি ক্রোধ থাকে তবে শক্রকুলে কী প্রয়োজন? যদি জ্ঞাতি থাকে তবে আগুনের কি প্রয়োজন? যদি বস্তু থাকে তবে গুষ্ঠিতে কি প্রয়োজন? যদি দুর্জন থাকে তবে সর্পের কি প্রয়োজন? যদি পরিশুদ্ধ বিদ্যা থাকে তবে ধনের কি প্রয়োজন? যদি লজ্জা থাকে তবে অলঙ্কারের কি প্রয়োজন? যদি উত্তম কবিত্বশক্তি থাকে তবে রাজত্বের কি প্রয়োজন?

আজ্ঞায়জনের প্রতি দাঙ্কিণ্য, পরিজনবর্গের প্রতি দয়া, দুষ্টজনের প্রতি সর্বদা শঠতা, সজ্জনের প্রতি ভালোবাসা, রাজার প্রতি ন্যায়পরায়ণতা, বিদ্বানের প্রতি সরলতা, শক্র প্রতি শৌর্য, শুরুজনের প্রতি সহনশীলতা এবং স্ত্রীলোকের প্রতি বাচালতা দেখানো উচিত। যে সকল পুরুষ কলাবিদ্যায় এই রকম নিপুণ, তাদের উপরেই নির্ভর করে সংসারের স্থিতি। বিদ্বান ব্যক্তি যেহেতু বিনয়ী এবং সরল হন, তাই ভর্তৃহরি বিদ্বান ব্যক্তির প্রতি সহজ-সরল আচরণের কথাই বলেছেন।

সজ্জনের সমাগম পুরুষের বুদ্ধির জড়তা নষ্ট করে, কথায় সত্যতা আনে, সম্মান বৃদ্ধি করে, পাপ দূর করে, চিন্তের প্রসমন্তা আনে, দিকে দিকে যশ ছড়িয়ে দেয়। পুণ্যবাব এবং রাসিকপ্রবর সেই সব শ্রেষ্ঠ কবিকুলের জয় জয়কার। তাঁদের কীর্তি-কলেবরে জরু এবং মরশের কোনো ভয় নেই। ভর্তৃহরি বলেছেন—

“জ্ঞান্তি তে সুকৃতিনো রসসিদ্ধাঃ কবীশ্বরাঃ।
নাস্তি যেয়াং যশঃকায়ে জ্ঞামরণজং ভয়ম্॥”